मृदा कायाकल्प

डेनमार्ट एग्रीबिजनेस प्राईवेट लिमिटेड

करे 100% जैविक खेती
कायाकल्प के साथ
और पाये उत्पादन में वृद्धि

MFG BY :- SHRI GANGA GAYATRI GAU VIGYAN ANUSANDHAN TRUST (U.P.)

Marketed by:- Denmart Agribusiness PVT. LTD
(a unit of Denmart Marketing PVT. LTD.)

TH-MANENDRAGRH Distt, Korea (C.g.) 497442,
Custmer Care: +91 744 111 4651, Email-admin@denmartagribusiness.com,
web:- www.denmartagribusinesss.com

नमस्कार किसान भाईयों.....

कठोर लेकिन कड़वा सच

आज भारत देश का शायद ही ऐसा कोई किसान भाई होगा जिसने जैविक खेती का नाम नही सुना होगा उसके बावजूद आज भारत देश के अधिकांशतः किसान भाई रासायनिक खेती पर ही निर्भर है,

ऐसा क्यो है कि सिर्फ 20–30 % किसान भाई ही जैविक खेती कर पा रहे है ? इसके पीछे का सबसे बड़ा कारण है कि आज किसान भाईयो के पास ऐसी कोई सस्ती, सरल, सुलभ व टिकाऊ जैविक पद्धति नही है जो किसान भाईयो का खर्चा भी बचा सके उसके साथ–साथ उत्पादन भी कम न हो बल्कि पहले इस्तेमाल से ही उत्पादन बढ़कर मिले

अगर आप ऊपर दिये गए तथ्यो से सहमत है और आप चाहते हैं कि इन सभी समस्याओं का आपको निदान मिले तो नीचे दी गई जानकारी को अच्छे से पढ़िए –

आप सभी अवगत है कि आज भारत देश के अधिकतर किसान भाई रासायनिक खेती करने के लिए मजबूर हैं, उन्हें लगता है अगर रासायनिक खेती नहीं करें या रासायनिक खाद का इस्तेमाल कम करें तो उत्पादन उतना नहीं मिलता जितना मिलना चाहिए, इसके अलावा भारत देश में जैविक खेती का प्रचार भी बहुत बढ़ा है। जिसके माध्यम से कई किसान भाई ने जैविक खाद को डालना शुरू किया लेकिन फिर भी आज अधिकांशतः किसान भाई रासायनिक खेती पर निर्भर हैं।

खेती में बढ़ती इन समस्याओं जैसे रासायनिक खाद एवं दवाओं का बढ़ता खर्च, कम उत्पादन, मिट्टी का खराब होना, पानी की समस्या, पहली बार से 100% जैविक खेती नहीं कर पाना, सिंचाई की समस्या, अंतिम उत्पाद की गुणवत्ता में कमी आना, फलों, सब्जियों का सही रेट नहीं मिलना इत्यादि।

जानिए 20 वर्षों का अनुसंधान –

इन सभी समस्याओं का अंदाजा **''श्री गंगा गायत्री गौ विज्ञान अनुसंधान ट्रस्ट'' उ.प्र.** को पहले ही पता हो गया था अतः उन्होंने इस विषय पर अनुसंधान की शुरूआत लगभग 20 वर्ष पहले से ही कर दी थी और उनके अनुसंधान का मुख्य घटक था– **''गौमूत्र, गोबर और मिट्टी''**

आप सभी जानते हैं कि आज के वैज्ञानिक युग में बिना गौवंश के भी खेती की जाती है जिसका दुष्प्रभाव हम अपनी मिट्टी को खराब होते देख रहे हैं, ट्रस्ट के मुख्य गौ वैज्ञानिक, आयुर्वेदिक चिकित्सक **प्रभुनाथ मिश्रा** के संपर्क में विभिन्न लोगों के साथ एकजुट होकर **गौमूत्र गोबर और मिट्टी** को अनेकों तरह से कई फसलों में लगातार उपयोग किया और मिट्टी की अवस्था के साथ–साथ फसलों का उत्पादन का भी निरीक्षण करते रहे और आने वाले समय में **गौमूत्र, गोबर और मिट्टी** के कम्पोजिशन में प्राकृतिक घटकों का नियोजन किया और नए रिसर्च किए और अद्भुत परिणाम सामने आए, प्रयास जारी रहा और लक्ष्य था एक ऐसी प्रणाली विकसित करना जिसके माध्यम से फसलों को संपूर्ण भोजन की पूर्ति हो जाए साथ–साथ रासायनिक खाद की निर्भरता भी खत्म हो जाए।

अनुसंधान जारी रहा और 20 वर्षों के अथक प्रयास के बाद सन् 2017 में डॉ. प्रभुनाथ मिश्रा और उनकी टीम ने मिलकर गौमूत्र, गोबर और मिट्टी का एक ऐसा प्राकृतिक संयोजन ढूंढ लिया है जिसका इस्तेमाल करने पर किसान भाई पहली बार से रसायन मुक्त खेती कर सकता है

और उसके साथ–साथ उत्पादन भी बढ़कर मिलता है। इस मिश्रण की खास बात यह है कि पौधों और मिट्टी को जिन तत्वों की जरूरत होती है उन सारे तत्वों की पूर्ति इस मिश्रण से हो जाती है। **मृदा कायाकल्प** एक अद्भुत आयुर्वेद के रासायनिक (जैविक रसायन) का विशेष मिश्रण है जिसमें विटामिन्स, प्राइमरी, मेक्रो एवं माइक्रो न्युट्रिएंट्स, एंजाइम्स, बैक्टीरिया और हार्मोन्स भी है उसके अलावा बहुत सारे अनुसंधान किए गए तत्व हैं।

आपको जानकर हैरानी होगी किं इतने सारे तत्वों को हमेशा अलग बॉटल में भरा जाता था, जिसकी वजह से किसानों को बहुत महँगे–महँगे अलग–अलग कई सारे उत्पाद खरीदने पड़ते थे और किसान भाई इतने सारे उत्पाद नहीं खरीद सकते थे, जिसकी वजह से किसान भाई जैविक खेती नही कर पाते थे यही कारण है कि **मृदा कायाकल्प भारत का एक मात्र उत्पाद है जिसमें इतने सारे तत्व व आयुर्वेदिक औषधि (जैविक रसायन) का समागम है, जिसे किसान भाईयों को सस्ते से सस्ते मूल्य पर उपलब्ध कराया जा रहा है, जिसे भारत का प्रत्येक किसान भाई अपनाकर पहली बार से शत प्रतिशत जैविक खेती कर सकता है।**

किसान भाई जिस दिन से मृदा कायाकल्प का उपयोग शुरू कर देता है उस दिन के बाद एक भी रासायनिक खाद डालने की जरूरत नहीं पड़ती है और पहली बार से किसान भाई पूर्ण रूप से 100% जैविक खेती कर सकता है, जो इससे पहले आज तक संभव नहीं था वो विज्ञान के बढ़ते प्रयोग और कुछ लोगों के जुनून ने वो करके दिखाया जिसकी आज भारत देश के प्रत्येक किसान भाई को जरूरत है।

अब जानिये मृदा कायाकल्प में पाये जाने वाले घटक (इंग्रीडिएट्स) की जानकारी–

मृदा कायाकल्प में पौधों को जरूरी सभी प्राइमरी, मेक्रो और माइक्रो न्युट्रिएंट्स, समाहित है जैसे यूरिया, यूरिक एसिड नाइट्रोजन, आक्सीजन, कार्बन, सिलिकॉन, मैग्नीशियम, पोटेशियम, फास्फेट, सल्फेट, सल्फर, अमोनिया, सोडियम, कॉपर, आयरन, मैंगनीज, कैल्शियम, जिंक, मोलिब्डेनम, क्लोरीन इत्यादि, उसके साथ–साथ विटामिन **A,B,C,D,** और **E** भी पाये जाते हैं। उसके साथ–साथ **मृदा कायाकल्प** का इस्तेमाल करने पर पौधों को अतिआवश्यक तत्व जो हवा और पानी के माध्यम से लिए जाते हैं जैसे हाइड्रोजन और आक्सीजन उन्हें लेने में भी विशेष मदद मिलती है।
लेकिन इन सभी तत्वों का संशोधिकरण जरूरी था और जरूरत थी ऐसे संयोजन की जिसमें मृदा और पौधों को सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्व भी पर्याप्त मात्रा में मिल जाए और रासायनिक खाद में आई खराबी भी दूर हो जाए, इसलिए लगभग 10–20 लीटर गौमूत्र को संशोधिकरण करके 1 लीटर गौमूत्र में तैयार किया गया और उसमें मिट्टी एवं पौधों को जरूरी सभी माइक्रो एवं मेक्रो न्युट्रिएंट्स, विटामिन्स हार्मोन्स, एवं कई सारी बैक्टीरिया को प्राकृतिक स्त्रोत से निकाला गया जिससे गौमूत्र और गोबर की ताकत को और बढ़ावा मिले और फसलों का सर्वांगीण विकास हो। **मृदा कायाकल्प** के उपयोग से पौधे को जरूरी सभी एंजाइम की प्राप्ति होती है और जो अंतिम उत्पाद बनकर आता है उनमें परीक्षण करने पर एंजाइम भरपूर मात्रा में मिलता है।

कायाकल्प में बहुत सारे बैक्टीरिया जैसे राईजोबियम एवं इसके अलावा कई सारे बैक्टीरिया का विशेष समायोजन किया गया है जिसके माध्यम से पौधों में स्वतः विकास करने की क्षमता विकसित होती है और साथ–साथ बैक्टीरिया मृदा सुधार में अहम योगदान निभाता है।

दोस्तों क्या आपने कभी सोचा है कि वन में इतने सारे पेड़ पौधे होते हैं लेकिन वहाँ कोई भी व्यक्ति रासायनिक खाद डालने नहीं जाता है फिर भी वहां फल-फूल होते हैं क्योंकि वहाँ की मृदा में ह्यूमस होता है और वही ह्यूमस मृदा कायाकल्प आपकी मृदा में लगातार 1-2 साल इस्तेमाल होने के बाद प्राकृतिक रूप से पैदा करता है और उसके बाद तो आपकी जमीन पूरी तरह से उपजाऊ बन जाएगी।

दोस्तों मृदा कायाकल्प का सबसे महत्वपूर्ण गुण मृदा में ह्यूमस को बनाना है जिसे आम भाषा में जैव मृदा भी कहते हैं।

जैव मृदा को आपके खेतों में कम से कम समय में उत्पन्न करने वाला भारत का एकमात्र उत्पाद है जिसके इस्तेमाल से रासायनिक खाद के कारण मिट्टी में आई हुई खराबी दूर भी होती है साथ –साथ मृदा का उपजाऊपन भी बढ़ता है और आपको हर साल उत्पादन बढ़कर मिलता है । जैसे जैसे मृदा कायाकल्प का उपयोग आपके खेतो में होता जाएगा वैसे वैसे जीवाणु मिट्टी में पाए जाने वाले अवशेषो को अपघटित करते है। **कायाकल्प** में गोबर के साथ गौमूत्र तथा अन्य तत्वो के गुण होने के कारण मिट्टी में अपघटन की प्रक्रिया बहुत ही तेज गति से होती और ह्यूमस पैदा होता है। जिस मिट्टी में एक भी हृयूमस पैदा नही होता वहाँ भी कायाकल्प ह्यूमस पैदा करने की क्षमता रखता है

ध्यान देने की बात यह है कि कायाकल्प मिट्टी में जो प्रक्रिया करता है वो प्रकृतिक होती है अर्थात जंगल के मिट्टी जैसा, मतलब जो विघटन होता है वो जीवाणु द्वारा होता है जिसके माध्यम से जिबरेलिक, फुलविक, ह्यूमिक और कई प्रकार के अमीनो एसिड बनते है जो मिट्टी को बिना मूल्य भोजन प्रदान करने में अहम भूमिका निभाते है।

क्या मृदा कायाकल्प के प्रयोग से खेतो में केचूए का आगमन होता है–

मृदा कायाकल्प के उपयोग से खेत की मिट्टी में सुधार होते होते 1 साल के बाद ही बरसात के समय केचुआ आने की शुरुवात हो जाती है और 2 –3 सालों में केंचुओं का ढेर लग जाएगा जिससे आपकी मिट्ट में केंचुआ खाद स्वतः ही निर्मित हो जाएगा उसके बाद तो आपको मृदा कायाकल्प की भी जरुरत नही पड़ेगी ।

क्या मृदा कायाकल्प कीट और रोगो को नियंत्रण भी करता है :–

ऊपर लिखे लेख से आपको पता चल ही गया होगा कि मृदा कायाकल्प फसलों को उसका भोजन पर्याप्त मात्रा में दिलवाता है जिससे पौधा मजबूत बनता है । और पौधों की रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्वि होती है उसके साथ साथ कायाकल्प प्राकृतिक कीट एवं रोग नियंत्रक का कार्य करता हैं। मृदा कयाकल्प में गौमूत्र एवं अन्य द्रव्य और तत्व होने के वजह से ये खाद और दवा दोनो का काम करता है। अगर आप शुरुवात से इसका बराबर स्प्रे करते है तो 70–80% संभावना है की कीट और रोग नही आएँगें ।

मृदा कायाकल्प के इस्तेमाल करने का तरीका :–

1. **मृदा कायाकल्प** का इस्तेमाल सभी प्रकार की फसलों में जैसे फल,फूल सब्जी,अनाज, औषधियों,नर्सरी एवं जमीन से उगने वाली प्रत्येक फसल में किया जा सकता है ।
2. **मृदा कायाकल्प**का उपयोग करने का सबसे अच्छा माध्यम स्प्रे विधि है 16 ली. के टैंक में लगभग 50 मि.ली. मिलाना है और पत्ते पूरी तरह से भींग जाएं ऐसा स्प्रे करना है ।
3. इसे बहते पानी या ड्रिप के साथ भी दिया जा सकता है, 1 एकड़ (100 डेसिमल) में लगभग 400 मि.ली. **मृदा कायाकल्प** जितना पानी 1 एकड़ में दिया जा रहा है, उसके साथ मिलाकर जहां से पूरे खेतो में पानी बह रहा है वहां पर कोई ड्रम या डब्बा में आवश्यकता अनुसार पानी रखकर उसमे नलकूप्पी या छेद कर दिजिए जिसके माध्यम से पानी टपकते टपकते पूरे खेतो में पहुँच जाए।
4. अगर आप पहली बार से ही उत्पादन में 50% या उससे ज्यादा वृद्धि करना चाहते है तो मृदा कायाकल्प का हर 15 दिन में एक छिडकाव कीजिये अन्यथा 3 से 4 स्प्रे किसी भी फसल के लिए सर्वोत्तम है।

नोट - 1. मृदा कायाकल्प के साथ किसी भी रासायनिक खाद या दवा का प्रयोग नही करना है।
2. मृदा कायाकल्प और रासायनिक दवा के उपयोग के मध्य कम से कम 4 दिन का अंतर जरूरी है।
3. जिस पम्प में मृदा कायाकल्प का इस्तेमाल किया जा रहा है उसे गर्म पानी के साथ निरमा मिलाकर अच्छे से धो लें।

श्री साई फ्लैक्स MDGR 9770362519